सरदार पटेल की अमर गाथा

* सरदार पटेल की जिंदगी का सफर
* सरदार पटेल की अमर वाणी
* महापुरुषों की दृष्टि में सरदार पटेल

सम्पादक

डॉ० राम सिया सिंह

एम. ए. ; एल. एल. बी. ; बी. एड. ; पी - एच. डी.

प्रान्तीय प्रचार मंत्री, मध्य प्रदेश कू. क्ष. समाज

समता प्रकाशन, सतना, मध्य प्रदेश

द्वितीय संस्करण सहयोग राशि 5. रु० मात्र

सरदार पटेल की अमर गाथा

- सरदार पटेल की जिंदगी का सफर
- सरदार पटेल की अमर वाणी
- महापुरुषों की दृष्टि में सरदार पटेल

सम्पादक
डॉ. राम सिया सिंह
एम.ए.; एल.एल.बी.; बी. एड.; पी-एच.डी.
प्रान्तीय प्रचार मंत्री, मध्यप्रदेश कू.क्ष. समाज

समता प्रकाशन, सतना, मध्य प्रदेश
[सहयोग राशि 5 रु. मात्र

★ प्रकाशकः

समता प्रकाशन, सरस्वती विहार, कैम्प रोड, कृष्णा दाल मिल के सामने, चाणक्यपुरी, सतना, म०प्र० (प्रधान कार्यालय)

★ पत्र व्यवहार तथा पुस्तक-प्राप्ति हेतु लेखक का वर्तमान पता-

o **डॉ० राम सिया सिंह, प्राचार्य** मनेरी, जि० मंडला, म०प्र०-481885
माह अक्टूबर 1996 से लागू पता -
डॉ० राम सिया सिंह, मु०पो० रामस्थान, जि० सतना, म०प्र० 485112

★ **प्रमुख वितरकः** पुस्तकें निम्नांकित पतों से भी प्राप्त की जा सकती

(1) अरविन्द सिंह ठाकुर, समता प्रकाशन, सरस्वती विहार, कैम्प रोड, कृष्णा दाल मिल के सामने, चाणक्यपुरी, सतना, म०प्र०
(2) श्री रामावतार सिंह, व्यवस्थापक, पटेल सेवा संस्थान, मु०पो० खण्डेहा (मऊ), जि० बाँदा, उ०प्र० –210209
(3) श्री कुशल सिंह ,एडवोकेट, (नादिन निवासी), अध्यक्ष, पटेल सेवा संघ, चित्रकूट धाम कर्वी, जि० बाँदा, उ०प्र०
(4) श्री अम्बिका प्रसाद रावत, जी-86/85, तुलसीनगर, 1250 क्वार्टर्स, (बस स्टाप नं० 2 जैन मंदिर), भोपाल, म०प्र०
फोन (निवास) 67559, 75338 कार्यालय 355656
(5) श्री रामकृष्ण मेहता, जनजागरण प्रकाशन, मु०पो०सोनमई, जि. पटना, बिहार

★ o द्वितीय संस्करण : 1996

★ सहयोग राशि : 5 रु. मात्र

★ कम्प्यूटर कम्पोजिंगः चौधरी प्रिंट मीडिया, 417, हनुमानताल रोड, जबलपुर, म०प्र० फोन 342755

★ मुद्रक : सिंघई आफसेट जबलपुर, फोन : 341006

लेखक परिचय
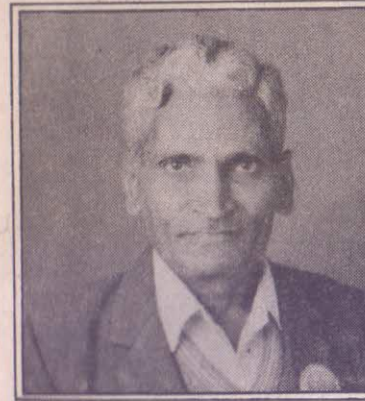
जन्म - 15 सितंबर 1936
रामस्थान, जिला सतना, म.प्र.
पिता - स्व. श्री रघुनाथ सिंह
माता - स्व. श्रीमती सुखरानी देवी
धर्मपत्नी - श्रीमती इन्दु कुमारी
पुत्र - चि. अरविन्द सिंह ठाकुर
पुत्रवधू - श्रीमती रंजना सिंह
(आत्मजा श्री हरिशंकर सिंह, प्राचार्य, शाहनगर, जि. पन्ना, म.प्र.)
सम्पर्क सूत्र - प्राचार्य, शासकीय, उ.मा.वि. मनेरी, जि. मंडला, म.प्र. - 481885

• आगरा विश्वविद्यालय से 1956 में बी.ए.; काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से 1958 मे राजनीति विज्ञान में एम.ए.; 1960 में सागर विश्वविद्यालय से एल.एल.बी.; 1965 में सागर विश्वविद्यालय से बी.एड. । 1967 में प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग, जबलपुर विश्वविद्यालय द्वारा डॉ. राजबली पाण्डेय के निर्देशन में 'प्राचीन भारत में नागरिकता' नामक शोधप्रबन्धन पर पी-एच.डी. की उपाधि से विभूषित।

• छात्र-जीवन से ही विभिन्न सामाजिक संगठनों और गतिविधियों में भागीदारी और नेतृत्व। टी.आर.एस. कॉलेज रीवा, म.प्र. में छात्र संघ के प्रधानमंत्री। पिछड़ा वर्ग छात्र संगठन के संस्थापक अध्यक्ष। विन्ध्य प्रदेश पिछड़ा वर्ग संघ के महामंत्री। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में 1957–58 में छात्रावास छात्रसंघ के अध्यक्ष रहे।

• विभिन्न सामाजिक राजनीतिक आंदोलनों का नेतृत्व ; समाजवादी आन्दोलन के दौरान तीन बार जेलयात्रा। सुविख्यात समाजवादी नेता तथा विचारक डॉ. राम मनोहर लोहिया के साथ सक्रिय राजनीति में भागीदारी तथा म.प्र. समाजवादी दल की राज्यसमिति के सदस्य रहे ।

• लेखन तथा अन्य साहित्यिक-सांस्कृतिक गतिविधियों में छात्र-जीवन से ही अभिरुचि तथा रचनात्मक भागीदारी। टी.आर.एस. कॉलेज, रीवा में निबंध प्रतियोगिता में प्रथम तथा ला सोसायटी, रीवा में अंग्रेजी वादविवाद प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार। सागर विश्वविद्यालय में हिन्दी वादविवाद प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में हिन्दी तथा अंग्रेजी वादविवाद प्रतियोगिताओं में प्रथम पुरस्कार प्राप्त।

• 13 जून 1971 को सतना में विशाल सामाजिक सम्मेलन डॉ० राम शरण सिंह की अध्यक्षता में आयोजित कराके **'सरदार पटेल समाज सेवा परिषद'** की स्थापना की और उसके संस्थापक अध्यक्ष हैं। परिषद के वार्षिक सम्मेलनों में आय-व्यय प्रस्तुतीकरण तथा भावी कार्यक्रमों का निर्धारण। विन्ध्यक्षेत्र में बालविवाह, दहेज प्रथा जैसी कुरीतियों के उन्मूलन तथा पुरातन पाखण्डवाद का पर्दाफाश करके समतामूलक समाज-निर्माण तथा शिक्षा प्रसार के लिए विभिन्न स्थानों में सभा- सम्मेलनों के आयोजन करवाते रहे। यज्ञोपवीत धारण करवाने में सक्रिय

समता प्रकाशन की बहुमूल्य भेंट

डॉ. रामसिया सिंह की बहुचर्चित लोकप्रिय सामाजिक उत्थान सम्बन्धी पुस्तकें

■ 1. कूर्मवंशी क्षत्रिय कीर्तिकथा

(द्वितीय संशोधित एवं परिवर्द्धित संस्करण-)

इस पुस्तक में कूर्मि क्षत्रियों की उत्पत्ति, क्षत्रियत्त्व के प्रमाण, विभिन्न वंश, अखिल भारतीय कूर्मि क्षत्रिय महासभा, स्वजातीय अमर शहीद, रियासतें, शिक्षण संस्थाएँ, कोष, ट्रस्ट, धर्मशालाएँ, छात्रावास, पुस्तकें, पत्रिकाएँ, प्रादेशिक संगठन, साहित्यकार, सांसद, विधायक, समाजसेवी, आई.ए.एस., आई.पी.एस., आई.एफ.एस. अधिकारी, 1911, 1921 तथा 1931 में कूर्मि क्षत्रिय जनसंख्या सम्बन्धी आँकड़े, छत्रपति शिवाजी, सरदार पटेल आदि की नवीनतम अखिल भारतीय स्तर की जानकारी है। प्रतिष्ठा-रक्षा सम्बन्धी ऐतिहासिक मुकदमा जनेऊ लखनऊ, फतेहपुर, बाराबंकी आदि के अदालती फैसले भी दिये गये हैं। उ.प्र., म.प्र., दिल्ली, बिहार आदि की नवीनतम कार्यकारिणी, विधायक, मंत्रियों की सूचियाँ भी दी गई है।

द्वितीय संशोधित एवं परिवर्द्धित संस्करण का मूल्य 25 रु. मात्र। समाज के हर सदस्य के लिए पठनीय। देश के कोने-कोने से प्रशंसा-पत्र प्राप्त।

■ 2. अखिल भारतीय कूर्मि क्षत्रिय परिचय प्रदीपिका-

समूचे भारत के विभिन्न प्रदेशों (आन्ध्र, म.प्र., बिहार, उ.प्र., दिल्ली, गुजरात, महाराष्ट्र, कर्नाटक, हरियाणा, असम, राजस्थान, उड़ीसा, पश्चिम बंगाल, केरल, अरुणांचल, तमिलनाडु आदि) के तथा विदेशों के लगभग 6000 समाजसेवियों के पते इसमें दिये गये हैं। 'कू.क्ष.महासभा तथा जागरण' के आजीवन सदस्यों, कार्यकारिणी समितियों, संसदसदस्यों की सूचियों, महासभा के संविधान आदि से युक्त इस ग्रन्थ में आपका भी उल्लेख हो सकता है।

सहयोग राशि 30 रु. मात्र ।

■ 3. सरदार पटेल की अमर गाथा--

भारतरत्न राष्ट्रनिर्माता लौहपुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल की यशस्वी जिंदगी की 101 महत्त्वपूर्ण घटनाएँ; सरदार पटेल के अनमोल विचार (किसानों, स्त्रियों, बालविवाह, विधवा-विवाह, दहेजनिरोध, अभय, राष्ट्रीय एकता, अखण्डता, वीरोचित मृत्यु, आर्थिक विचार, राष्ट्रीय-करण, समाजवाद आदि पर दिल में सीधे चोट करने वाले विचार); देश विदेश के महापुरुषों के द्वारा सरदार पटेल के सम्बन्ध में मार्मिक उद्गार (जैसे महात्मा गाँधी, जय प्रकाश नारायण, जवाहरलाल नेहरू, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, एस.के. पाटिल, सरोजिनी नायडू, पट्टाभि

सीतारमैया, वी. शंकर, मोरारजी देसाई, काका कालेलकर, विनोबा भावे, आचार्य चतुरसेन, सर नाक हर्ट, माइकेल एडवर्ड्स इत्यादि)। समाज के प्रत्येक घर में पठनीय प्रेरणाप्रद पुस्तक का मूल्य 5 रु. मात्र ।

■ 4. दलितों के मसीहाः राजर्षि छत्रपति शाहू जी महाराज--

कोल्हापुर के सुप्रसिद्ध कूर्मि क्षत्रिय नरेश छत्रपति शाहू जी की जीवनगाथा, जिन्होंने भारत में आज से लगभग 80 वर्ष पुर्व पहली बार अपने राज्य में दलितों और पिछड़े वर्गों को 50 प्रतिशत आरक्षण दिया; पाखण्डवाद का पर्दाफाश किया, वितण्डावादियों से जमकर संघर्ष किया और डॉ. भीमराव अम्बेडकर को आर्थिक सहायता देकर उच्च शिक्षा के लिए विदेश भेजा और उन्हे दलित वर्गों के उत्थान की क्रान्तिकारी दिशा देकर भारत का नक्शा ही बदल दिया। छत्रपति शाहू न होते, तो डॉ. अम्बेडकर न होते और डॉ. अम्बेडकर न होते तो दलित वगो का क्या हाल होता, इसकी कल्पना मात्र की जा सकती है। ऐसे महापुरुष राजर्षि शाहूजी महाराज की यशस्वी गाथा का मूल्य 5 रु. मात्र ।

■ 5. गायत्री परिवार ही क्यों ?--

गायत्री परिवार के सम्बन्ध में विभिन्न जिज्ञासाओं का समाधान प्रश्नोत्तर शैली में। डिमाई साइज, ३२ पृष्ठ, मूल्य 2 रु. मात्र ।

■ 6. गोंडवाना की गौरवगाथाः --

गढ़ा-मंडला, खेरला, चाँदा, देवगढ़ जैसे गोंड राज्यों का प्रामाणिक इतिहास। रानी दुर्गावती, संग्रामशाह आदि के यशस्वी शासन की अनुपम झाँकी; शोधग्रन्थ। मूल्य 30 रु. मात्र।

■ 7. बोधक लघुकथाएँ-- मूल्य 4 रु. मात्र

अत्यन्त उपयोगी रोचक तथा ज्ञानवर्द्धक 32 बोधकथाएँ।

■ 8. मार्मिक लघुकथाएँ-- मूल्य 15 रु. मात्र

हितोपदेश तथा पंचतंत्र की परम्परा में अत्यन्त रोचक तथा बोधगम्य शैली में लिखी 62 सारगर्भित शिक्षाप्रद कहानियाँ।

■ 9. सफलता के सूत्र -- मूल्य 10 रु. मात्र

अत्यन्त प्रेरणादायक जीवनोपयोगी 25 लेखों का संग्रह।

■ 10 .समाजसेवी जगमगाते हीरे-

भारत के विभिन्न प्रान्तों के लब्धप्रतिष्ठ समाजसेवी नररत्नों के पारिवारिव व्यक्तित्व तथा कृतित्व का प्रेरणादायी सचित्र परिचय प्रस्तुत करने वाला अनूत ग्रन्थ। हजारों - लाखों पाठकों को समाजसेवा करके समाजोत्थान हेतु अपन जीवन उत्सर्ग करने की प्रेरणा प्रदान करने वाली अनमोल धरोहर। सहयो राशि 50 रु० मात्र।

परिजनों से विशेष अनुरोध

उपर्युक्त पुस्तकों की कम से कम 50 प्रतियां तक मंगाने पर 25 प्रतिशत छूट दी जायेगी। कम से कम 50 प्रतियां मंगाने वाले परिजनों के नाम विशिष्ट सहयोगी की सूची में प्रकाशित किये जायेंगे, तथा 25 प्रतिशत छूट भी दी जायेगी। पुस्तकें मनीआर्डर या बैंक ड्राफ्ट द्वारा राशि भेजकर अथवा वी०पी० से भी मंगा सकते हैं। हार्दिक आभार। --*प्रकाशक*

पत्र व्यवहार तथा पुस्तकें मगाने हेतु सम्पर्क सूत्र

पत्रव्यवहार तथा पुस्तकें मगाने हेतु लेखक का वर्तमान पता :-

- डॉ० राम सिया सिंह, *प्रान्तीय प्रचार मंत्री,* म०प्र० कू० क्ष० समाज, मनेरी, जि० मंडला, म०प्र०- 481885
- माह अक्टूबर 1996 से लागू पता-
  डॉ० राम सिया सिंह, मु०पो० रामस्थान,
  जि० सतना, म०प्र- 485112

प्रकाशक :

समता प्रकाशन, कैम्प रोड, कृष्णा दाल मिल के सामने, चाणक्यपुरी, सतना, म.प्र. (प्रधान कार्यालय)

सरदार पटेल की अमर गाथा

खण्ड 1

सरदार वल्लभभाई पटेल की जिंदगी का सफर

1. 31 अक्टूबर, 1875 को गुजरात के करमसद गांव में सरदार का जन्म। पिता झबेर भाई पटेल तथा माता लाड़बाई।
2. 1893 में झबेर बा के साथ विवाह।
3. 1897 में नडियाद से मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण।
4. 1900 में गोधरा में मुख्त्यारकारी आरंभ।
5. अप्रैल 1903 में सुपुत्री मणिवेन का जन्म।
6. 28 नवम्बर 1905 को सुपुत्र डाह्या भाई का जन्म।
7. 11 जनवरी 1909 को पत्नी का बम्बई में स्वर्गवास।
8. 1910 में बैरिस्टरी के लिए इंगलैण्ड की यात्रा।
9. 13 जनवरी 1913 को बैरिस्टरी पास कर स्वदेश वापसी।
10. 1916 में गांधी जी से प्रथम भेंट।
11. 1917 में खेड़ा सत्याग्रह में प्रमुख भाग लिया।
12. 1917 में अहमदाबाद की नगरपालिका में सेवाएँ- सदस्य के रूप में प्रारंभ।
13. 1917 में अहमदाबाद में प्लेग निवारण का कार्य किये।
14. 6 अप्रैल 1919 को रोलट ऐक्ट के विरुद्ध जुलूस।
15. 7 अप्रैल 1919 को सरकारी अनुमति के बिना 'सत्याग्रह' नामक पत्रिका का प्रकाशन।
16. 11 जुलाई 1920 को गुजरात विद्यापीठ की स्थापना का निर्णय।
17. 1921 में गुजरात की प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी के प्रथम अध्यक्ष निर्वाचित हुए।
18. 1921 में अहमदाबाद में कांग्रेस अधवेशन के स्वागताध्यक्ष बने।
19. 1921 में सदा के लिए बैरिस्टरी छोड़ दी।
20. 9 सितंबर 1923 को नागपुर के झंडा सत्याग्रह में विजयी
21. दिसम्बर 1923 में बोरसद में सत्याग्रह में विजयी
22. 1924 में अहमदाबाद नगरपालिका के चेयरमैन बने।
23. 1927 में अहमदाबाद नगरपालिका के पुनः चेयरमैन बने।
24. 1927 में गुजरात के बाढ़ संकट का निवारण।
25. 29 फरवरी 1928 से बारदोली में करबन्दी सत्याग्रह प्रारंभ किये।
26. अक्टूबर 1928 में बारदोली सत्याग्रह में विजयी।

27. दिसम्बर 1928 में कलकत्ता कांग्रेस में अभूतपूर्ण सम्मान।
28. 7 मार्च 1930 को भाषणबंदी आज्ञा उल्लंघन के फलस्वरूप गिरफ्तारी तथा पौने चार मास की सजा।
29. 26 मार्च 1930 को पं० मोतीलाल नेहरू द्वारा कांग्रेस के स्थानापन्न अध्यक्ष बनाये गये।
30. 1 अगस्त 1930 को बम्बई में जुलूस निकालने के कारण 3 मास की सजा।
31. दिसम्बर 1930 में भाषणबंदी की आज्ञा उलंघन पर 9 मास की सजा।
32. 25 जनवरी 1931 को ब्रिटिश प्रधान मंत्री की आज्ञा से जेल से मुक्ति।
33. मार्च 1931 में कराँची में कांग्रेस अधिवेशन की अध्यक्षता।
34. 4 जनवरी 1932 को गांधी जी के साथ यरवदा जेल में नजरबन्द।
35. 14 जुलाई 1934 को अस्वस्थता के कारण जेल से मुक्ति।
36. 1934 में पटना कांग्रेस पार्लियामेंटरी बोर्ड के अध्यक्ष चुने गये।
37. 23 मार्च 1935 से बोरसद में प्लेग निवारण का कार्य प्रारंभ।
38. 8 अप्रैल 1936 को कमला नेहरू अस्पताल के फंड का प्रबन्ध।
39. 2 जुलाई 1936 को पुनर्गठित कांग्रेस पार्लियामेंटरी बोर्ड के अध्यक्ष के रूप में चुनाव संघर्ष का संचालन।
40. 1938 में बारदोली के हरिपुरा गांव में सर्वप्रथम ग्रामीण अधिवेशन में श्री सुभाष चन्द्र बोस अध्यक्ष तथा सरदार स्वागताध्यक्ष बने।
41. 25 दिसम्बर 1938 को राजकोट के ठाकुर साहब के साथ प्रजापक्ष की ओर से समझौता किया जिसे ठाकुर साहब ने भंग किया।
42. 25 जनवरी 1939 को सरदार और ठाकुर साहब के बीच तनाव की स्थिति के कारण गांधीजी ने 3 मार्च से 7 मार्च 39 तक उपवास किया।
43. 18 नवम्बर 1940 को अहमदाबाद में व्यक्तिगत सविनय अवज्ञा आन्दोलन में नजरबन्द कर लिये गये।
44. 28 फरवरी 1941 को कमला नेहरू अस्पताल का 5 लाख रुपये के योगदान से श्रीगणेश किया।
45. 20 अगस्त 1941 को अस्वस्थ रहने के कारण इन्हें जेल से मुक्ति मिल गयी।
46. अप्रैल 1942 में 'अंग्रेजो भारत छोड़ो' का प्रस्ताव लाया।
47. जुलाई 1942 में वर्धा में पुनः प्रस्ताव लाये और इलाहाबाद में इसी संबंध में एक भाषण किये।
48. 28 जुलाई 1942 को अहमदाबाद में एक पत्रकार गोष्ठी की।
49. 30 जुलाई 1942 को महिलाओं की सभा की और मंसकटी मार्केट अहमदाबाद में उन्हें अलग से सम्बोधित किया।

50. 2 अगस्त 1942 को बम्बई चौपाटी पर 'अंग्रेजो भारत छोड़ो' आन्दोलन की भावी रूपरेखा बनाई।
51. 7 अगस्त 1942 को गांधीजी के 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव का समर्थन किया तथा एक प्रभावशाली भाषण दिये।
52. 9 अगस्त 1942 को अन्य नेताओं के साथ नजरबन्द कर लिये गये।
53. 15 जून 1945 को अन्य नेताओं के साथ छोड़ दिये गये और शिमला सम्मेलन में भाग लिये।
54. 26 फरवरी 1946 को भारतीय जल सेनाओं के विद्रोह को शान्त किया।
55. लार्ड वावेल के अनुरोध पर भारतव्यापी डाक हड़ताल को समाप्त करवाया।
56. 5 मई 1946 कैबिनेट मिशन के तीनों सदस्यों से शिमला में बातचीत की।
57. 24 जून 1946 को कैबिनेट मिशन के सदस्य सरदार से निजी परामर्श किये।
58. 25 जून 1946 को कैबिनेट मिशन के सदस्यों के साथ हुए वार्तालाप की स्वीकृति भंगी कॉलोनी में गांधी जी से भी ली।
59. 2 सितम्बर 1946 को भारत की अन्तरिम सरकार में गृह मंत्री बने।
60. 9 दिसम्बर 1940 को भारतीय संविधान परिषद में प्रथम बार भाग लिया।
61. 4 अप्रैल 1947 को वल्लभ विधानगर में विट्ठल भाई महाविद्यालय का उद्घाटन किया।
62. 5 जुलाई 1947 को सरदार की अध्यक्षता में देशी राज्यों की समस्या सुलझाने के लिए रियासती विभाग की स्थापना हुई।
63. 5 जुलाई 1947 को ही देशी राज्यों के नाम एक अपील निकाली गयी कि समझौते के आधार पर वे सभी 15 अगस्त तक भारत में सम्मिलित हो जायें।
64. अपील के बाद हैदराबाद, कश्मीर और जूनागढ़ के अतिरिक्त 15 अगस्त 1947 तक सभी देशी राज्यों के राजाओं ने हस्ताक्षर कर दिया।
65. 15 अगस्त 1947 को स्वतंत्र भारत में नवीन भारतीय उपनिवेश के उपप्रधानमंत्री तथा गृहमंत्री बने।
66. 30 सितम्बर 1947 को अमृतसर में सिक्ख जत्थेदारों से पाकिस्तान न जाने वाले मुस्लिम शरणार्थियों की हत्या न करने तथा उन्हें जाने देने की अपील की।
67. 9 नवम्बर 1947 को सरदार पटेल की आज्ञा से जूनागढ़ राज्य पर अधिकार कर लिया गया।
68. 13 नवम्बर 1947 को सोमनाथ का दौरा करके सोमनाथ मंदिर के पुनर्निर्माण करने का संकल्प किया, जो 11 मई 1961 को नवनिर्मित मंदिर के रूप में प्रतिष्ठित हुआ।
69. 14 नवम्बर 1947 को सरदार ने बिहार के नीलगिरि राज्य पर अधिकार करने की आज्ञा दी।

70. नवम्बर 1947 में पाकिस्तान की शिकायत संयुक्त राष्ट्र संघ की सुरक्षा परिषद् में करने के नेहरू के फैसले का विरोध किया।

71. 14 दिसम्बर 1947 को कटक जाकर उड़ीसा के 23 राज्यों के राजाओं से भारतीय संघ में विलय-पत्रों पर हस्ताक्षर कराया।

72. 15 दिसम्बर 1947 को नागपुर जाकर छत्तीसगढ़ के 38 राज्यों के राजाओं से विलय-पत्रों पर हस्ताक्षर कराये।

73. 1948 में महात्मा गांधी के उपवास के फलस्वरूप सरदार पटेल, नेहरूजी तथा उनकी सरकार ने 15 जनवरी 1948 को पाकिस्तान को 55 करोड़ रुपये देने का निर्णय किया।

74. फरवरी 1948 में भारतीय संविधान परिषद में गांधीजी के लिए किये गये प्रबन्ध पर प्रकाश डाला।

75. 15 फरवरी 1948 को भावनगर में सौराष्ट्र संघ का उद्घाटन किया तथा जाम साहब को राजप्रमुख की शपथ दिलाई।

76. 20,21,22 अप्रैल 1948 को ग्वालियर, इन्दौर आदि मध्य भारत के 25 राजाओं से विलय-पत्र पर हस्ताक्षर कराये।

77. 22 अप्रैल 1948 को 25 राजाओं द्वारा 'ग्वालियर, इन्दौर तथा मालवा का संयुक्त संघ' बनाने के संधि-पत्र पर हस्ताक्षर कराये।

78. मई 1948 के प्रारंभ में अपनी बीमारी की हालत में ही पूँजीपतियों को मसूरी बुलाकर 'गांधी स्मारक निधि' के लिए सहायता की अपील की।

79. 15 जुलाई 1948 को 'पटियाला तथा पंजाब राज्य संघ'' का निर्माण किया।

80. 13 सितम्बर 1948 को हैदराबाद पर चढ़ाई करके 17 सितम्बर 1948 को ही ऐतिहासिक विजय प्राप्त की।

81. 31 अक्टूबर 1948 को सरदार के 74 वें जन्म दिवस पर बम्बई में उन्हें स्वर्णमय अशोक स्तम्भ तथा गांधी जी की 800 तोले चाँदी की मूर्ति भेंट की गई।

82. 3 नवम्बर 1948 को नागपुर विश्वविद्यालय द्वारा उन्हें डॉक्टर आप लाज की सम्मानित उपाधि प्रदान की गई।

83. 25 नवम्बर 1948 को काशी हिन्दू विश्वविद्यालय द्वारा उन्हें डॉक्टर ऑफ लॉज की सम्मानित उपाधि प्रदान की गई।

84. 26 नवंबर 1948 को इलाहाबाद में पंडित गोविन्द वल्लभ पन्त के करकमलों द्वारा पटेल-अभिनन्दन-ग्रन्थ भेंट किया गया।

85. 27 नवम्बर 1948 को प्रयाग विश्वविद्यालय द्वारा डॉक्टर ऑफ लॉज की सम्मानित उपाधि प्रदान की गई।

86. 4 दिसम्बर 1948 को ग्वालियर में 'ग्वालियर इन्दौर तथा मालवा राज्यों के संघ' की विधान सभा का उद्घाटन किया।

87. जनवरी 1949 में बड़ौदा के सर प्रताप सिंह गायकवाड़ को बड़ौदा राज्य को बम्बई राज्य में विलीन करने के लिए सहमत कराया।

88. 24 फरवरी 1949 को हैदराबाद के निजाम ने अपनी अकड़ का परित्याग करके हवाई अड्डे पर जाकर हाथ जोड़कर सरदार पटेल का अभिवादन किया।

89. 26 फरवरी 1949 को उस्मानिया विश्वविद्यालय की ओर से डाक्टर ऑफ लाज की सम्मानित उपाधि प्रदान की गई।

90. 30 मार्च 1949 को 'राजस्थान संघ' का उद्घाटन किया तथा महाराजा जयपुर को राजप्रमुख पद की शपथ दिलवाई।

91. 13 अप्रैल 1949 को त्रावनकोर तथा कोचीन राज्य का एक संघ बनवाया।

92. 15 मई 1949 को नवाब रामपुर से विलय-पत्र पर हस्ताक्षर करवाया।

93. मई 1949 के अन्त में भोपाल के बागी नवाब से विलयपत्र पर हस्ताक्षर करवाया।

94. 7 अक्टूबर से 15 नवम्बर 1949 तक नेहरूजी की विदेश-यात्रा के कारण स्थानापन्न प्रधानमंत्री का कार्यभार सँभाला।

95. 28 अप्रेल 1950 को अहमदाबाद में 15 लाख रुपयों की थैली भेंट की गई।

96. अप्रेल 1950 में भारत-पाकिस्तान व्यापार समझौते पर हस्ताक्षर किये।

97. 19 मई 1950 को कन्याकुमारी मंदिर में पूजन किया।

98. 20 से 22 सितम्बर 1950 तक नासिक कांग्रेस में भाग लिये।

99. 16 अक्टूबर 1950 को राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन ने अपनी नई अ०भा० कांग्रेस कार्य-समिति में उन्हें पुनः कोषाध्यक्ष बनाया।

100. 9 नवम्बर 1950 को दयानंद निर्वाण दिवस के दिन भाषण देते हुए चीनी आक्रमण की भविष्यवाणी की।

101. 12 दिसम्बर 1950 को स्वास्थ्य परिवर्तन के लिए बम्बई गये।

102. 15 दिसम्बर 1950 को प्रातःकाल 9 बजकर 37 मिनट पर सरदार पटेल का स्वर्गवास हो गया।

103. 15 दिसम्बर 1950 को ही भारतीय संसद में शोक प्रस्ताव पारित हुआ।

104. 15 दिसम्बर 1950 को ही 7 बजकर 40 मिनट पर भारत में सभी नेताओं के समक्ष पुत्र डाह्याभाई द्वारा उनका अन्तिम अग्नि संस्कार सम्पन्न हुआ। नौ किलो मीटर लम्बी शवयात्रा में लाखों लोगों ने उन्हें अश्रुपूरित श्रद्धांजलि अर्पित की।

➢

खण्ड 2

सरदार पटेल की अमर वाणी

नारीशक्ति की महत्ता

1. "बहनो, तुम अबला हो, कमजोर हो, ऐसा क्यों मानती हो ? तुम तो शक्ति का अवतार हो। अपनी माता के बिना इस दुनिया में कौन से पुरुष का जन्म हुआ है ? इसलिए तुम अपनी इस दीनता को छोड़ दो।" (14-11-28)

2. "स्वराज्य आयेगा तब स्त्रियों का प्रश्न हल हो जायेगा, ऐसा मानना गलत है। सच बात तो यह है कि स्त्रियों का योग्य स्थान हमने छीन लिया है। उन्हें उनके योग्य स्थान पर बैठाया जायेगा, तभी भारत में स्वराज्य आयेगा।"

(15-6-38)

3. "पुरुष और स्त्री के बीच का विवाह-सम्बन्ध पवित्र है, और उसमें एक-दूसरे के प्रति जिम्मेदारी अदा करने का फर्ज समाया हुआ है।" (9-2-38)

4. "जहाँ स्त्री पर विश्वास और प्रेम होता है, वहाँ उसके साथ व्यवहार अलग ही प्रकार का होता है, उसके साथ भाषा भी दूसरे ही प्रकार की बोली जाती है, और कुछ अलग ही प्रकार का स्नेह और रस उस व्यवहार में दिखाई देता है। स्त्री के साथ ऐसा व्यवहार हो तभी वीर सन्तान पैदा की जा सकती है, और उसका भलीभांति पालन-पोषण हो सकता है।

अगर आप--

ढोल, गँवार, शूद्र पशु नारी ।
ये सब ताड़न के अधिकारी ।।

-- इस नीति को अभी तक मानते हों तो हम गुलाम ही रहेंगे। इतना आप समझ लीजिए कि स्त्री माता बनने वाली है, अतः वह नमस्कार करने योग्य है, लकड़ी से ताड़ना करने योग्य नहीं।" (18-12-28)

5. "स्त्री में आत्मविश्वास पैदा हो, वह अपना उचित स्थान प्राप्त करे, यह आवश्यक है। ऐसे सुधार कानून से न तो कभी हुए हैं, और न आगे कभी होने वाले हैं।" (15-6-38)

माता की महिमा

6. "अगर हमारी माताएँ खादी का दो सेर बोझ भी शरीर पर उठा न सकें, तो वे अपने बालकों में क्या ताकत पैदा करेंगी ?" (29-3-21)

7. "पिता कभी माँ का स्थान ले नहीं सकता । और सौतेली माँ के बजाय तो माँ का न होना ही अधिक अच्छा है, ऐसा सारी दुनिया का अनुभव है।" (17-7-33)

8. "अगर हमारी बहनें, माताएँ और पत्नियाँ हमारा साथ न दें, तो हम आगे नहीं बढ़ सकेंगे।" (बारदोली 1928)

9. ''माता का वात्सल्य ही ऐसा है कि उसकी कमी दूसरा कोई पूरी नहीं कर सकता।" (16-11-39)

स्त्री बहुत शक्तिशालिनी है

10. ''स्त्रियों में जितनी शक्ति होती है, उतनी पुरुषों में भी नहीं होती। स्त्रियों की सहन-शक्ति का कोई पार ही नहीं है। स्त्रियों ने तो पुरुषों में भी शक्ति पैदा की है।" (30-7-42)

बाल विवाह के सम्बन्ध में

11. "बचपन में ही लड़के लड़कियों की शादी करके कच्ची उमर में उठाकर गृहस्थी का सारा बोझ लादना अपने बच्चों की हत्या करने जैसा है।" (मार्च 1936)

12. "छोटी-छोटी बालिकाओं पर स्त्री के कर्त्तव्य का सारा बोझ डालकर आप उन्हें कुचल न डालें। वे कोमल फूल हैं, खिलती कलियाँ हैं। उन्हें समय से पहले क्यों मारते हैं ?"

13. "अगर मेरे हाथ में सत्ता होती तो बारह-तेरह वर्ष की बालाओं का विवाह करने वालों को मैं बन्दूक मार देने या फाँसी के तख्ते पर लटका देने का कानून बना दूँ। " (नवजीवन 12-6-27)

14. "विवाह जैसी गम्भीर बात आज गुड्डे-गुडियों का खेल बन गई है।"

15. "जो ब्राह्मण गुड्डे-गुडियों जैसे बालकों और बालिकाओं का विवाह करने के लिए स्मृतियों या धर्म-ग्रंथों का हवाला देते हैं, वे ब्राह्मण नहीं, बल्कि राक्षस हैं। और जो माता-पिता ऐसे ब्राह्मणों की बात मानकर विवाह की काली माता के सामने बच्चों का भाग चढ़ाते हैं, वे स्वयं पशु हैं। कानून मेरे हाथ में होता तो मैं ऐसे लोगों को गोली से उड़ा देने की सजा दूँ।" (नवजीवन 29-1-29)

बालक-बालिकाओं को विवाह के मामले में स्वतंत्रता

16. "बालिग उमर के लड़के-लड़कियाँ अपनी इच्छा के अनुसार विवाह करें। इसमें माता-पिता या सगे-सम्बन्धियों को रुकावट नहीं डालनी चाहिए। अगर वे रुकावट डालें तो यह उनका अत्याचार माना जायेगा। अगर कोई माता-पिता या सगे सम्बन्धी बालिग उमर के लड़के-लड़कियों पर अपने विचार जबरन लादें, तो वे अपराधी माने जायेंगे।" (3-5-36)

नारी को परदे से बाहर करो

17. 1929 में सरदार पटेल ने चम्पारन जिले में दौरा करते हुए स्त्रियों को परदे में रखने पर तीखा प्रहार करते हुए कहा--

"गांधी जी आपको आशीर्वाद देते हैं। मैं आपको गालियाँ देने आया हूँ। आपको शरम नहीं आती कि अपनी स्त्रियों को परदे में रखकर आप स्वयं अर्धांग (लकवे) की बीमारी भुगत रहे हैं ? ये स्त्रियाँ कौन हैं ? आपकी माँ, बहन, पत्नी, जिन्हें परदे में रखकर आप यह मानते हैं कि आप इनके सतीत्व की रक्षा कर सकेंगे ? इनका इतना अविश्वास क्यों ? या आप इसलिए डरते हैं कि आप की गुलामी वे बाहर आकर देखेंगी? आपने उन्हें गुलाम पशु बनाकर रखा है। इसलिए उनकी सन्तान आज भी पशुओं जैसी गुलाम रह गई है। बारदोली में मैंने लोगों से कह दिया था कि मुझे आपकी स्त्रियों से मिलने और बातें करने की आजादी न दोगे तो मैं सत्याग्रह नहीं कराऊँगा। स्त्रियाँ समझ गईं। सभाओं में आने लगीं, और थोड़े समय बाद तो सभाओं में पुरुषों के बराबर ही स्त्रियाँ आती थीं। घर जाकर जो कुछ आपसे कहता हूँ अपनी स्त्रियों को सुनाइए और कहिए कि गुजरात से एक किसान आया था, वह कह रहा था, कि आप बाहर नहीं निकलेंगी तो हमारे लिए कभी सुख नहीं होगा। अगर मेरी चलती हो तो सब बहनों से कह दूँ कि ऐसे डरपोक और नामर्दों की स्त्रियाँ बनने के बजाय उन्हें तलाक दे दीजिए।"

दहेज प्रथा का विनाश करो

18. "सरदार पटेल तिलक, दहेज प्रथा के घोर विरोधी थे। किसी के दहेज की बात सुनकर वे कह उठते— "ये सब झंझटें छोड़कर इस लड़के को बाजार में क्यों नहीं रख देते ?"

"सांड के पांच हजार आये या सात हजार ?-" ऐसा कहकर वे किसी भी दहेज लेने वाले से पूछकर उसे शर्मिन्दा करते थे।

विधवाओं की करूण कहानी

19. "इस दुनिया में हिन्दू विधवा की जैसी करुण दशा होती है, वैसी दूसरे किसी की नहीं होती। विधवा के लिए लगाए हुए समाज के बन्धन और विधवा के साथ समाज का व्यवहार इतना क्रूर और कठोर होता है, कि उसका जीवन तपस्या ही बन जाता है।" (1-12-44)

अस्पृश्यता और ऊँचनीच के भेदभाव खत्म करो

20. "अस्पृश्यता—छूआछूत— हिन्दू धर्म पर लगा हुआ कलंक है। वह धर्म के नाम पर चलने वाला निरा ढोंग है। उसे हमें मिटाना ही होगा।" (31-5-29)

21. "किसी भी आदमी को अछूत मानना पाप है। अस्पृश्यता-छूआछूत-निरा भ्रम है। अगर कुत्ते को छूकर हमें नहाना नहीं पड़ता, बिल्ली को छूकर भी नहाना नहीं पड़ता तो फिर जो हमारे जैसा मनुष्य है उसे छूकर हमें क्यों नहाना चाहिए ? हिन्दुओ, तुम अपने ही जैसे मनुष्यों को अछूत मानते हो, यह तुम्हारी भूल है। "

(नवजीवन, 12-6-27)

"ऊँच-नीच का भेद मानने वालों को राजसत्ता प्राप्त करने का अधिकार ही नहीं जो दूसरों पर चढ़ाई करता है, उसके कंधों पर चढ़ बैठने वाला कोई न कोई इस ...िया में निकल ही आता है।" (मार्च 1936)

गुलामी अपराध है

23. "एक आदमी दूसरे आदमी को गुलाम बनाकर रखे यह अभाग्य है। ...रे को गुलाम बनाकर रखने वाला तो अपराधी है ही, लेकिन गुलाम बना रहने वाला ... अपराधी है।" (15-12-37)

24. "गुलामी ऐसी चीज है, जो लम्बे समय के बाद मीठी लगने लगती है। ...ाम को आजादी अच्छी नहीं लगती। पिंजरे के पक्षी की तरह उसके भीतर से आजादी ... भावना नष्ट हो जाती है। लेकिन जो आदमी गुलाम को गुलामी में जकड़ कर रखता ... उसे कलंक पाप लगता है।" (26-1-39)

शोषण समाप्त करो

25. "जो दूसरों को अपने शोषण पर जीने देते हैं, वे मनुष्य नहीं, लेकिन ...नवर हैं। ऐसी स्थिति से हमें छूटना चाहिए।"

(हरिजन बंधु 3-3-35)

26. "सारी दुनिया के साथ टक्कर लेनी हो, तो दीन और लाचार बनने से ...म नहीं चलेगा।" (5-12-38)

स्वराज्य कैसा हो?

27. "हम ऐसा स्वराज्य चाहते हैं, जिसमें सूखी रोटी न मिलने के कारण कहीं मनुष्य मरते न हों, पसीना बहाकर पैदा किया हुआ अनाज किसानों के बच्चों के ... से छीनकर विदेश न ले जाया जाता हो। जिसमें लोगों को कपड़ों के लिए पराये ...ों पर आधार न रखना पड़ता हो, थोड़े से विदेशियों की सुविधा की खातिर राजकाज ...शी भाषा में न चलता हो, हमारे विचारों और शिक्षा का माध्यम विदेशी भाषा में न ..., राज्य का शासन जमीन और आसमान के बीच पृथ्वी तल से सात हजार फीट की ...ाई तक न होता हो। महान देशभक्तों की स्वतंत्रता तो खतरे में हो, परन्तु शराबियों ... आजादी की रक्षा करने की खास तौर पर चिन्ता रखी जाती हो, ऐसी स्थिति स्वराज्य नहीं हो सकती।"

सैनिक का धर्म है देश की रक्षा

28. असम रेजिमेण्ट, शिलांग में 2 जनवरी 1948 को सरदार पटेल ने ...धिकारियों और सैनिकों को सम्बोधित करते हुए कहा—

"एक सैनिक का प्रथम और सर्वप्रधान कर्तव्य है–अपने देश के लिए जीना उ
उसी के लिए मरना। यह उसका धर्म है। मुझे विश्वास है, बल्कि मैं सुनिश्चित हूँ,
आप अपने धर्म के लिए ही जिएँगे।"

देश की स्वाधीनता और सुरक्षा

29. "हमारी मर्यादा और प्रतिष्ठा की रक्षा तब होगी जब हमारा घर सुव्यवस्थि
होगा। जब तक हमें घर में आदर और सम्मान प्राप्त नहीं होगा तब तक उसे बाहर कै
प्राप्त कर सकते हैं ?"

30. "हम पर जिन लोगों की रक्षा का भार हो उन पर खतरा आ ज
पर खाट के नीचे छिप जाने या दरवाजे बंद कर लेने के वजाय तो रक्षा के लि
लड़ते-लड़ते मर जाना अच्छा है।"

31. "भारत जब-जब स्वतंत्र हुआ है तब-तब उसका स्वातंत्र्य--विनाश वा
आक्रमणों से नहीं, आंतरिक दुर्बलता से हुआ है। अतः इस समय भारत को अत्यंत
जागरूक और सावधान हो जाना चाहिये।"

डरो नहीं, संगठित होकर अन्याय का विरोध करो

32. "जो प्रजा राज्य का जुल्म सहन करती है, वह राज्य को जुल्मी बन
में सहायक होती है। जुल्म का विरोध करना प्रजा का धर्म है।" (मार्च 1929

33. "अपनी रक्षा के लिए संगठन न करना आत्महत्या करने के बराबर है

(बारडोली 1928

34. "हम अपने आज के कर्तव्य का पालन करेंगे तो कल का काम क
खुद ही कर लेगा । अच्छा काम आप थोड़ा भी करेंगे तो वह हजारों से ज्यादा अच
माना जायेगा।"

(नवजीवन 7-4-29

35. "आपकी जबान में खुलेआम अपनी बात कहने की हिम्मत नहीं
लेकिन कोने में बैठकर बोलने की आदत है। यह आदत आप छोड़ दीजिये। कोने
बैठकर बोली हुई बात बेकार साबित होती है।" (नवजीवन, 7-4-29

शक्ति, संगठन और नेतृत्व

36. "अगर प्रजा का बल संगठित हो जाए तो कोई भी सरकार उस
सामना नहीं कर सकती है।"

37. "नेता बनने की कुंजी सेवा में है।"

38. "जो मौत से डरता है, उसी के लिए बंदूक है।"

39. "शक्ति के अभाव में केवल श्रद्धा से कोई काम नहीं होता। किसी
बड़े काम को पूरा करने में श्रद्धा और शक्ति दोनों की जरूरत होती है।"

(नवजीवन,14-1-23

40. "बात नहीं करो, काम करो। आराम नहीं, श्रम करो। अपने भले की
...ों, देश के भले की बात सोचो।"

41. सारे झगड़े को कोल्ड स्टोर में रख दो, देश को समृद्ध करो।

42. उत्पादन बढ़ाओ, खर्च घटाओ, अवकाश बिल्कुल कम करो।

43. "दुख उठाए बिना सुख कभी नहीं मिलता। अच्छा रास्ता यह है कि
समझ बूझ कर दुख को सहन करें।"

44. "दुनिया में हमें नम्रता से, विवेक से चलना चाहिए और हमारे जो
...धिकार हों उनकी दृढ़ता से माँग करनी चाहिए।"

किसानों के प्रति आत्मीयता

45. "सारी दुनिया का भार किसान पर है । दुनिया का निर्वाह एक किसान
...र दूसरे मजदूर से होता है। फिर भी सबसे ज्यादा जुल्म सहन करते हैं तो यही दोनों
...योंकि ये दोनों चुपचाप जुल्म बरदाश्त कर लेते हैं। मैं किसान हूँ, किसान के दिल में
...स सकता हूँ और इसीलिए उसे समझाता हूँ कि उसका कारण यह है कि वह हताश हो
...या है, वह मानने लगा है कि इतनी बड़ी सत्ता के सामने हमारी क्या चलेगी। सरकार
...नाम पर एक चपरासी भी आकर उसे धमका जाता है, गालियाँ दे जाता है और बेगार
...रा लेता है। सरकार की जितनी मर्जी हो उतना कर-भार उस पर डाल देती है।"

46. "किसान डर कर दुःख उठाये और जालिमों की लातें खाये, उससे मुझे
...र्म आती है। मेरे जी में आता है कि किसान को कंगाल न रहने देकर खड़ा कर दूँ
...र स्वाभिमान से सिर ऊँचा करके चलने वाला बना दूँ। इतना करके मरूँ तो अपना
...ना सफल समझूँ।"

47. "इस बार सरकार का क्रोध उबल पड़ा है। लोहा जब गरम होता है
...ब लाल सुर्ख हो जाता है और उसमें से चिनगारियाँ उड़ने लगती है। परन्तु लोहा चाहे
...जितना ही गरम हो जाय, हथौड़े को तो ठंडा ही रहना चहिए। हथौड़ा गरम हो जाय
...तो अपना ही नुकसान करता है। लोहे को इच्छानुसार रूप देना हो तो हथौड़े के गरम
...होने से काम नहीं चल सकता। इसलिए कितनी ही विपत्तियाँ आयें, हमें गरम न होना
...चाहिए।"

48. "मैं तो तुम्हें कुदरत का कानून पढ़ाना चाहता हूँ। किसान होने के
...कारण तुम सब जानते हो कि जब थोड़े से बिनौले जमीन में गड़ और सड़कर नष्ट होते
...हैं तब खेत में ढेरों कपास पैदा होती है। मरे बिना यदि स्वर्ग मिल सकता हो तो केवल
...विधान सभा में प्रस्ताव पास करने से हमें मुक्ति मिल सकती है।"

49. "आज यह सरकार ऐसी मदमत्त हो गई है, जैसे जंगल में कोई पागल
...हाथी घूम रहा हो और उसकी टक्कर में जो कोई भी आ जाय उसे वह कुचल डालता
...है। पागल हाथी मद में यह मानता है कि मैने जब बाघों और शेरों को मारा है तो इस
...मच्छर की मेरे सामने क्या बिसात है। परंतु मैं मच्छर को समझाता हूँ कि इस हाथी को
...जितना खेलना हो खेल लेने दो और फिर मौका देखकर उसकी नाक में घुस जाओ।"

50. "बड़े घड़े से बहुत ली ठिकरियाँ बनती हैं। परंतु उनमें से एक ठीकर भी सारे घड़े को फोड़ने के लिए काफी है। घड़े से ठीकरी क्या डरे? फूटने का ड किसी को हो तो वह घड़े को होना चाहिए, ठीकरी को क्या डर हो सकता है?"

51. "हमने कहीं चोरी तो की नहीं और न डाका डाला है।हम अपनी प्रतिष्ठ के लिए लड़ रहे हैं।"

52. "आप देखेंगे कि सरकार की तोप बंदूक का वार बेकार जाएगा। हमा सामने उन तोपों से फूल ही झरेंगे।"

53. "किसी की भूमि कोई न ले। यह भाग तो माँस के बराबर है। ह माता का दूध आठ मास पीते हैं धरती को तो हम वर्षों से चूसते आ रहे है। अब आइए कुछ दिनों के लिए धरती माता को भी आराम कर लेने दें । इतने में ही सरकार की बुद्धि ठिकाने आ जाएगी।"

54. "आप तो किसान के बच्चे हैं। किसान का बच्चा कभी दूसरों की ओ हाथ नहीं पसारता।"

55. "किसान क्यों डरे? वह भूमि जोत कर धन कमाता है। वह अन्नदात है। वह स्वयं दूसरों की लात क्यों खावे ?"

56. "कुनबी के सहारे करोड़, कुनबी किसी के सहारे नहीं।' ऐ किसान, तु सचमुच जगत का तात माना जाता है। दुनियाँ में असली उत्पादक किसान और मजदू हैं। बाकी सब किसानों और मजदूरों पर जीने वाले हैं। इन पैदा करने वालों की स्थिति सबसे अच्छी होनी चाहिए; उसके बजाय उस की दशा सबसे बुरी बनी हुई है।"

57. "दो तरह की मक्खियाँ होती हैं। एक मक्खी दूर जंगल में जाकर फूलों से रस लेकर शहद बनाती हैं दूसरी मक्खी मैले पर ही बैठती है और गंदगी फैलाती है। एक मक्खी संसार को शहद देती है, तो दूसरी छूत फैलाती है। सुना है, ये छूत की मक्खियाँ तुम्हारे यहाँ काम कर रही हैं। उन मक्खियों को अपने पास आने ही न दो। अपने में गंदगी और मैल ही न रखो, जिससे वे मक्खियाँ तुम्हारे पास आवें।'

58. "इस धरती पर अगर किसी को सीना तान कर चलने का अधिकार है तो वह जमीन जोतकर धन-धान्य पैदा करने वाले किसान को ही है।"

59. "शरीर से आप भले दुबले--पतले हों, लेकिन कलेजा तो बाघ और सिंह का रखिए। अपने सम्मान के लिए आप मरने की शक्ति हृदय में रखिए और इतनी बुद्धि रखिए कि कोई आपको आपस में लड़ा न सकें।"

सरदार पटेल का आर्थिक चिन्तन

पूँजीपतियों को कर्तव्य-बोध

60. "मुझ पर आरोप लगाये गये हैं कि मैं राजाओं, पूँजीपतियों और जमींदारों का मित्र हूँ।...............मैं पूँजीपतियों से प्रायः कहा करता हूँ कि उनका कर्तव्य क्या

है। किन्तु मैं राजाओं, पूँजीपतियों आदि को निष्प्रयोजन गाली देते रह कर नेतागिरी चमकाने या नेता बनने के वर्तमान फैशन के सम्मुख घुटने टेक नहीं सकता।"

समाजवाद

61. ''सच्चा समाजवाद ग्रामोद्योग के विकास में है।''

(3 जनवरी 1935, अहमदाबाद)

62. ''गाँधी-आश्रम में अपरिग्रह (सम्पत्ति का संचय न करना) पहला उसूल है। यही समाजवाद है; है न? व्यावहारिक समाजवाद।'' (1939)

63. ''क्या तुम सम्पत्ति को समान करना चाहते हो? किन्तु समान करने के लिए सम्पत्ति कहाँ है? क्या तुम गरीबी का बँटवारा करना चाहते हो? हमने गरीबी का बँटवारा करने के लिए आजादी नहीं हासिल की है, हमें पहले धन पैदा करना है।''

64. ''अनेक व्यक्तियों के विपरीत, जो समाजवाद की तोतारटन्त में मशगूल रहते हैं, मेरे पास कोई जायदाद नहीं है। समाजवाद की बात करने के पहले खुद अपने से पूछो कि तुमने अपनी मेहनत से कितना धन पैदा किया है। यदि तुमने कुछ भी पैदा नहीं किया है तो तोता उड़ गया होगा और पिंजड़ा खाली हो गया होगा। तजर्बे से मुझे यकीन हो गया है कि हमारे लिये धन पैदा करना सीखने और अधिक धन कमाने की जरूरत है और उसके बाद यह सोचना कि उसका क्या करना है। देश को समाजवाद की रटन्त की नहीं, बल्कि एकता और बल की आवश्यकता है।''

(2 जनवरी 1948, कलकत्ता)

राष्ट्रीयकरण

65. "राष्ट्रीयकरण तभी करने योग्य है यदि सरकार उद्योगों का निपुणता के साथ प्रबन्ध कर सकती हो। हमारे पास प्रशासन चलाने तक के लिए न आदमी हैं और न साधन। हमें राज्यों के लिए राजकर्मचारियों को उपलब्ध करना पड़ा था, फिर भी उस खूबी के साथ नहीं चलाये जा रहे हैं जिस खूबी के साथ उन्हें चलाना चाहिये। जिन्हें ज्ञान और अनुभव है उन्हें उद्योगधन्धों का प्रबन्ध करने और देश की सम्पत्ति बढ़ाने दें।"

66. "हमारी आर्थिक अवस्था पर बुरी तरह का जोर पड़ रहा है। यदि इसे हम ठीक नहीं करते, तो हमारी सेना ठीक से काम नहीं कर सकेगी। हमें धन की जरूरत है, हमें साधन-सामानों की आवश्यकता है और देशहित के निमित्त हम सबको त्याग करना होगा। ''''' जिनके पास ज्ञान और तजरवा है, वे आगे आवें और धन बढ़ाने में हमारी सहायता करें। उद्योगपतियों के पास दोनों ही बातें--ज्ञान और अनुभव प्रचुर मात्रा में हैं। उन्हें अपनी अकल और साधनों को देश के हवाले कर देना चाहिये। अन्यथा यदि देश का विनाश होता है तो उनकी सम्पत्ति एक क्षण के लिए भी उनका साथ न देगी।"

कायरता नहीं, पुरुषार्थ करो

67. "पुरुषार्थ कठिनाइयों का सामना करके उहें पार करने में हैं।"

68. "कठिनाई सामने दिखाई पड़ी कि हाथ-पाँव समेट कर बैठ जाना अँ उन्हे दूर करने की कोई कोशिश न करना, यह निरी कायरता है।"

69. "बहादुर आदमी नए रास्ते बनाते हैं। कायर और डरपोक आदमी समा के झूठे बन्धनों से डरकर समाज और परिवार की अधोगति में सहायक बनते हैं।"

श्रम का महत्त्व

70. "हम गरीब भले ही हों, लेकिन हम दया के पात्र क्यों बनें? दूसरों संहारे रहने और जीने में हमारी कंगाली जाहिर होती है। हमें तो हर बात में स्वावलम्ब बनना चाहिए--अपने पैरों पर खड़ा होना चाहिए।" (हरिजन, 3-3-35)

71. "आज का युग श्रम करके जीने वालों का है, बैठे-बैठे खाने वालों क नहीं है। बुद्धिवाद का जमाना अब लद गया है।" (हरिजन, 3-3-35)

72. जो मेहनत करता है उसका अधिकार पहले है।"

(हरिजन, 9-1-39)

धैर्य का मीठा फल

73. "धैर्य कड़वा है लेकिन उसका फल मीठा है।"

शिक्षा, शिक्षक, और शिक्षार्थी

74. "राष्ट्रीय शिक्षा का ध्येय यह है कि उसे पाकर किसानों के लड़के अप बाप की विद्या को भूल न जाएँ, और वापस गाँवों में ही जाकर रहें।"

(12-1-30)

75. तुम लोग ऊँची शिक्षा ग्रहण कर रहे हो, इस कारण अपने गरीब भाइय को भुला न देना; क्योंकि उनकी पसीने की कमाई से ही तुम्हें यह शिक्षा मिलती है।

(सितम्बर 1929)

76. "तुम चाहे जैसी शिक्षा लो, लेकिन शिक्षा पाकर ऐसे न बन जाना वि गरीब किसानों में जाओ तब तुम्हें देखकर डर के मारे वे उसी तरह भाग खड़े हों जि तरह उनके बैल मोटर को देखते ही चौंककर भाग खड़े होते हैं।"

(सितम्बर 1929)

77. "शिक्षक विद्यार्थियों को शिक्षा भले ही कम दें, लेकिन अगर उनके चरित्र का प्रभाव विद्यार्थियों पर पड़ता हो तो वह बहुत काम कर सकता है।"

छात्र-छात्राओं की फैशनपरस्ती

78. "शालाओं में या कालेजों में पढ़ने वाली छात्राओं को मौज शौक की नहीं, किंतु मेहनत करने की आदत डालनी चाहिए।"

79. "विद्यार्थियों में भी यह दोष आ गया है। वे मानते हैं कि मेहनत करना नौकर-चाकर का, गँवार आदमी का काम है। पर यह बड़ी गलत बात है। हाथ-पैर चलाने में ही मनुष्य की सच्ची शोभा है।"

80. "हम मजदूरों की तरह नहीं, परन्तु समझ-बूझकर मेहनत करें। उसके साथ हममें अच्छे संस्कार आने चाहिए, अच्छे विचार करने चाहिए और मधु--मक्खी जिस तरह फूल में से सारी मिठास खींच लेती है, उसी तरह दुनियाँ में जहाँ-जहाँ अच्छी, चीज हो वहाँ से उसे खींच लेने की शक्ति हममें आनी चाहिए, मैले पर बैठनेवाली मक्खी को फूल पर बैठाया जाय तो भी वह फूल की सुगन्ध नहीं लेगी, बल्कि वहाँ गन्दगी ही करेगी; लेकिन मधुमक्खी जहाँ शहद मिल सकता है वहाँ से शहद ही लेगी। हमें भी ऐसा ही करना चाहिए।"

(7-4-1947)

81. "इन छोटी-छोटी बालाओं को आप कितने बारीक कपड़े पहनाते हैं? ऐसे कपड़े इन्हें पहनाना हमें शोभा नहीं देता।

स्त्रियों की शोभा क्या महीन साड़ियाँ पहनने से बढ़ेगी?"

(नवजीवन, 26-3-22)

82. आज के नौजवान तो अपने कपड़ों का बोझ भी नहीं उठा सकते।

(नवजीवन, 12-6-27)

ढोंगी साधुओं से सावधान

83. "भगवे कपड़े पहनने वाले ही साधु नहीं हैं; जो जनता की सच्ची सेवा करते हैं वे भी साधु हैं।" (नवजीवन, 6-12-23)

84. "धर्म केवल मंदिर जाने में, कबूतरों वगैह पंखियों को दाना चुगाने में या चींटियों के लिये आटा डालने में ही पूरा नहीं हो जाता। आज देश के लाखों आदमी कपड़ों के बिना दुःख भोगते हैं। ऐसी हालत में हमारा पहला धर्म तो यह है कि हम हर एक घर में चरखा शुरू करें।"

(29-3-21)

85. "जो जनता हजारों साधुओं को रोज लड्डू और मालपूए खिलाती है, वह अपने सेवकों को ज्वार बाजरे की रोटी खिलाने में कभी आनाकानी नहीं करेगी।"

(नवजीवन, 6-12-23)

86. "................आप इन साधुओं को छोड़ दीजिए जो इस तरह के प्रपंच करते हैं, झगड़े करके अदालतों में जाते हैं। जो इस लोक में अपनी रक्षा नहीं कर सकते, वे परलोक में हमें क्या तारेंगे; हमारा क्या उद्धार करेंगे?"

87. "थोड़ा सा भी त्याग करने वालों को हिन्दुस्तान के लोग पूजते हैं। इसीलिए तो यहाँ लाखों ढोंगी और पाखंडी लोग पूजे जाते हैं। जिसने भी भगवे कपड़े पहन लिए, उसी को भोलाभाला हिंदू साधु मान लेता है; लेकिन जितने आदमी भगवे कपड़े पहने हैं उतने सब साधु नहीं होते। उसी तरह केवल सफेद टोपी और कुर्ता पहन लेने से ही कोई गांधी का आदमी नहीं बन जाता।" (हरिजन 9-1-39)

अदालत से अच्छा यमराज

88. "वकील और अदालत के पास जाने की बनिस्पत यमराज के पास ज ज्यादा अच्छा है। दुनिया में भगवान के नाम पर ही जितना झूठ अदालतों में बोला ज है उतना और कहीं नहीं बोला जाता होगा।" (सितम्बर 192

सभी धर्म अच्छे हैं

89. उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद में 27 फरवरी 1949 को छ को सम्बोधित करते हुए सरदार ने कहा---

"सभी धर्म अच्छे हैं। धर्म के अन्दर हमने जाने-अनजाने जो बुराइयाँ सम्मि कर ली हैं, केवल उन बुराइयों को हमें छानकर अलग कर देना होगा।"

देशभक्ति

90. "मैं इतना जानता हूँ कि मैं भारत का एक निष्ठावान सिपाही बना रह चाहता हूँ। यदि इस निष्ठा से मैं एक कदम भी डिगता हूँ तो परमात्मा मेरा जीवन सम कर दे।"

91. "यह देश सबका है। सभी धर्मों और सम्प्रदायों के लोगों को मिल देश के विकास के लिए आगे आना चाहिए।"

सत्याग्रह

92. "कठोर-से-कठोर हृदय को भी प्रेम से वश में किया जा सकता है, अ सामने वाले की कठोरता के मुकाबले में हमारा प्रेम उतना ही सबल हो, तो हम ज जीत सकते हैं। सत्याग्रह की लड़ाई का यही रहस्य है।"

93. सन् 1921 में अहमदाबाद कांग्रेस के अधिवेशन में स्वागताध्यक्ष व हैसियत से बोलते हुए सरदार पटेल ने कहा था– "कैद, शारीरिक क्लेश, जबर्दस्ती तलाश शैक्षणिक संस्थाओं में तालाबन्दी, मासूम जनता पर अग्नि वर्षण– ये सभी स्वाधीनता स्पष्ट चिन्ह हैं। रौलेट एक्ट के विरोध में, खिलाफत आन्दोलन में और जलियांवाला बा हत्याकांड जैसे पवित्र यज्ञ में शहीद होने वाले बन्धुओं की दिवंगत आत्मा के प्रति श्रद्धांज अर्पित करने के लिए तथा घायल माताओं, बहनों एवं भाइयों के जख्मों पर मरहमपट्ट कर स्वाधीनता का मार्ग प्रशस्त करने के लिए भी आप सब का हृदय से स्वागत कर हूँ।"

94. गांधी जी की गिरफ्तारी के पश्चात् सरदार पटेल ने कहा था--

"..........लोगों का गांधी जी के प्रति प्रेम और उनके जेल जाने स्वराज्य की जागृत भावना ही उनकी सबसे बड़ी पूँजी हैं। गांधी जी की अहिंसा- वृत्ति उनका प्रेम, उनकी ममता, उनकी स्वराज्य की लगन और उनका अथक परिश्रम आँखों के सामने रखकर अगर वे दिन-रात मेहनत करेंगे और गांधी जी द्वारा तैयार करके दिया हुआ

स्वराज्य का चतुर्विध कार्यक्रम पूरा करेंगे, तो वे अपनी तमाम त्रुटियों को पार करके गांधी जी के नाम और अपनी वफादारी को उज्ज्वल करेंगे, इसमें संदेह नहीं है।''

95. 30 मार्च 1918 को खेड़ा जिले के नड़ियाद में एक सभा आयोजित की गई थी। सरदार पटेल ने इस सभा में कहा--

"इस लड़ाई से सारे देश में आग लग जाएगी। दुःख सहन किए बिना सुख नहीं मिलता, और मिल जाए तो वह लम्बे समय तक टिकता नहीं। मजबूत और दृढ़ विचारों की जनता हो, इसी में राज्य की शोभा है। नालायक और डरपोक प्रजा की वफादारी में सार नहीं, निडर और स्वाभिमान की रक्षा करने वाली वफादार प्रजा ही सरकार को शोभा देती है....."

96. 1927 ई. में किसानों की जमीन जब्त कर लेने के शासन के निर्णय के विरुद्ध किसानों को प्रेरित करते हुए सरदार पटेल ने दृढ़ता पूर्वक कहा---

"तुम्हें विश्वास होना चिहिए कि यह जमीन हमारे बाप-दादों की थी और हमारी ही रहेगी। किसानों की जमीन तो कच्चा पारा है। ऐसी हालत में जो उसे लेगा, वह उसी के पेट से फूटकर निकलेगी। अगर सरकार की नीयत जमीन पर हो, तो मैं उसे चेतावनी देता हूँ कि अगले मौसम में एक सिरे से दूसरे सिरे तक तालुके में आग लगा दूँगा, परन्तु यों ही तो एक पैसा भी नहीं देने दूँगा।"

क्षणभंगुर जीवन

97. "कोई नहीं जान सकता कि अन्तिम क्षण कब आएगा। इसलिए मन में जो कुछ कहने जैसा हो, उसे पहले ही कह रखना चाहिए और जी हल्का करके मौज से रहना चाहिए।"

एकता का अमर सन्देश

98. 15 अगस्त 1947 को भारत की स्वतंत्रता के अद्भुत क्षण में भारतवासियों को सम्बोधित करते हुए भारतरत्न लौहपुरुष पटेल ने एकता का अमर सन्देश देते हुए उप प्रधानमंत्री रूप में आह्वान किया--

"तुम सभी एक हो–भारत माता की सन्तान, तुम्हारा एक ही धर्म है--मानव धर्म, तुम्हारा एक ही नारा है–वन्दे मातरम्! अतः ऐ भारत माता की अनुपम सन्तान, अब स्वाधीनतापूर्वक अपनी विकास-यात्रा प्रारम्भ करो।"

सत्याग्रह का रहस्य

99. अप्रैल 1938 में मैसूर में राष्ट्रीय झंडा फहराने के प्रयास में ब्रिटिश गोली से 32 लोग मारे गए और 48 लोग गम्भीर रूप से घायल हो गये। 11 नवम्बर को काठियावाड़ प्रजा मंडल द्वारा बम्बई में एक सभा का आयोजन किया गया। इस सभा में बोलते हुए सरदार पटेल ने कहा--

".....बारह घंटे में राजकोट की प्रजा की पीठ पर ग्यारह-ग्यारह बा लाठियाँ बरसाई गईं। बहुत-सी बहनों के सिर फूट गए। अनेक मनुष्य बेहोश हो गए, अनेक घायल हो गए और खून के फव्वारे उड़े। राजकोट के राक्षसी राज्य का प्रजा ने सामना किया। उसमें राजकोट की प्रजा न तो हारी और न डरी.....राजकोट में एव भी मनुष्य राज्य के पक्ष में नहीं है। कितने दिन लाठियाँ मारेंगे? एक दिन, दो दिन तीसरे दिन तो राक्षसों के हाथ टूट ही जायेंगे। लाठी मारने वाले को कोई जवाब में पत्थ मारे, लाठी मारे या गाली दे, तो उसके भीतर का राक्षस भड़कता है, परन्तु सामना किए बिना मार सहन करें तो उसमें भी ईश्वरीय भाव पैदा होता है। यही सत्याग्रह का रहस्य है।"

मरना ही है तो मर्दों की तरह मरो, मृत्यु से भय क्यों?

100. "जोखिम से डरना, मृत्यु से डरना है।.........मरना-जीना तो ईश्वर वे हाथ की बात है। जिसने जन्म लिया है उसे मरना तो होगा ही, फिर मृत्यु से भय क्यों? मरना ही है तो मर्दों की तरह मरो।"

आत्मरक्षा के लिए हथियार उठाना अहिंसा है

101. "तलवार का जवाब तलवार से दिया जाएगा, और खून की नदियं बहाने वाले को क्षमा नहीं किया जाएगा। आत्म-रक्षा के लिए हथियार उठाना हिंसा नहं अहिंसा, है, अहिसा कमजोर का नहीं, बहादुरों का हथियार है।"

➢

खण्ड 3

महापुरुषों की दृष्टि में सरदार पटेल

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की दृष्टि में पटेल

सरदार पटेल के नेतृत्व में खेड़ा किसान आन्दोलन अभूतपूर्व ढंग से सफल हुआ था। नडियाद (गुजरात) में इसके उपलक्षय में एक उत्सव मनाया गया। इस समारोह में बोलते हुए गांधी जी ने कहा था---

"सेनापति की होशियारी अपनी कार्यसमिति चुनने में है। बहुत से लोग मेरी सलाह मानने को तैयार थे। लेकिन मैंने सोचा कि उपसेनापति कौन होगा? इतने में मेरी नजर भाई वल्लभभाई पर गई। मुझे यह स्वीकार करना चाहिए कि भाई वल्लभभाई से पहली बार मेरी भेंट हुई, तब मुझे लगा था कि यह अकड़वाला आदमी कौन है? यह क्या काम करेगा? लेकिन जैसे-जैसे मैं उनके अधिक संपर्क में आता गया, वैसे-वैसे मुझे लगता गया कि वल्लभभाई तो मेरे साथ होने ही चाहिए। वल्लभभाई ने भी माना– 'मेरी वकालत खूब चल रही है, म्युनिसिपैल्टी में भी मैं बड़े महत्व का काम कर रहा हूँ। लेकिन इन दोनों से ज्यादा बड़ा काम देश का है। वकालत आज चलती है, कल बन्द भी हो जाय। पैसा आज है, कल भाग जाय; संभव है वारिस उसे उड़ा दें। इसलिए पैसा से ज्यादा ऊँची विरासत मैं बच्चों के लिए छोड़ जाऊँगा'– ऐसे अनेक विचार करके वे सत्याग्रह में कूद पड़े। अगर वल्लभभाई मुझे न मिले होते तो जो काम हुआ है वह हो ही नहीं सकता था। मुझे इस भाई का इतना शुभ अनुभव हुआ है।" **---महात्मा गांधी**

2. 8 मई 1933को गांधी जी ने यरवदा जेल में 21 दिनों के आत्मशुद्धि के लिए अनशन की घोषणा की। 14 जनवरी 1932 से 8 मई 1933 तक सरदार पटेल गांधी जी के साथ ही यरवदा जेल में कैद थे। गांधी जी के अनशन की घोषणा से डरकर सरकार ने 8 मई 1933 को ही उन्हें जेल से मुक्त कर दिया। जेल से निकलने के बाद गांधी जी ने वल्लभभाई पटेल के सम्बन्ध में अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए कहा था---

"जेल में सरदार वल्लभभाई के साथ रहने का अवसर मिला, यह बड़े सौभाग्य की बात थी। उनकी अद्वितीय शूरवीरता और ज्वलंत देशभक्ति का तो मुझे पता था। परन्तु इन सोलह महीनों में उनके साथ जिस तरह से रहने का सौभाग्य मुझे मिला उस तरह मैं उनके साथ कभी नही रहा था। उन्होंने मुझ पर जो हार्दिक ममता और प्रेम बरसाया, उससे तो मुझे अपनी प्यारी माँ का स्मरण हो आता था। मैं नहीं जानता था कि उनमें ऐसी माता के गुण भी होंगे। मुझे कुछ भी होता कि वे बिस्तर से उठ बैठते। मेरी सुविधा की जरा-जरा बात की भी वे खुद चिंता रखते थे।" **---महात्मा गांधी**

अन्य महापुरुषों की दृष्टि में पटेल

3.''सरदार वल्लभभाई पटेल का सर्वोत्तम वर्णन 'कर्मवीर' शब्द के द्वारा किया जा सकता है। नरसिंह की भाँति मौन तथा जेकब एप्सटीन निर्मित मूर्ति की तरह स्थिर आनन वाले थे वह। परंतु जब सरदार गतिमान होते थे, तब देश एक दम काँप उठता था। सरदार पटेल शक्ति के पर्याय थे। उन्हें जो भारत का 'दृढ़ मौन मानव', 'लौह पुरुष' 'घन' और 'हमारे देश का बिस्मार्क' कहा जाता था, वह सर्वथा उपयुक्त था''

---सम गैस्टेलिनो

4. ''बम्बई कांग्रेस ने उनके 70 वें जन्मदिवस पर उन्हें रजत राजदण्ड भेंट किया था। इससे अधिक प्रतीकात्मक भेंट और कुछ नही हो सकती थी, क्योंकि सरदार का जन्म ही धन और राजदण्ड धारण करने के लिए हुआ था। चाहे कोई सरदार के सारे कामों को भूल जाय, किन्तु उन्हें देश का सर्वाधिकारभाजन बनानेवाली दो बातें नहीं भूल सकता। वह दल के 'सर्वोच्च नियामक' थे और पाँच सौ से भी अधिक रियासतों के एकीकर्त्ता थे जिसके कारण अंग्रेजों के प्रस्थान के बाद देश को प्रायः संघबद्ध करने में वह कृतकार्य हुए।''

---सम कैस्टेलिनो

5.''यदि कोई मुझ से देश के उस सर्वोत्कृष्ट राजनीतिज्ञ का नाम पूछे तो मैं बिना किसी हिचकिचाहट के फौरन ही सरदार बल्लभभाई का नाम चुन दूँगा।''

---एस०के०पाटिल

6. ''उनकी दूरदर्शिता, उनकी सबको राजी करने और संगठित करने की अद्‌भुत शक्ति, स्थिति को ठीक समझने की योग्यता और दृढ़तापूर्वक संकल्प करने की शक्ति ने इस देश के इतने बड़े भूभाग को एक संघीय विधान और एक केन्द्रीय शासन की छत्रछाया के नीचे ला दिया है जैसा इसके लम्बे और शुभअशुभ घटनापूर्ण इतिहास में कभी नहीं हुआ है।''

---डा०राजेन्द्र प्रसाद

7.''पटेल वाचाल नहीं हैं, कर्मठ हैं । पाखण्डी नहीं हैं, स्पष्टवक्ता हैं। घूम फिर कर काम नहीं करते, सीधे चलते है और सीधी लकड़ी घुमाते हैं। ऐसी विभूति युगों में मिलती है, ऐसा शासक सदियों में मिलता है। ऐसा महापुरुष अपनी छाया को भी महापुरुष बना देता है। ऐसा विशिष्ट प्राणी जो छू देता है, वही सोना बन जाता है।''

---सम्पूर्णानन्द

8.''ब्रिटेन के साम्राज्यवादी दुर्गों का ध्वंस करने वाला, लीमी तानाशाह की कुचालों को विफल कर देने वाला, समस्त विरोधी शक्तियों को नष्ट-भ्रष्ट करने के लिए तूफान की गति रखने वाला, राजनीति के प्रांगण में चाणक्य जैसा अद्‌भुत क्षमताशील, अपने कठोर व्यक्तित्व में एक आकर्षक, मृदुल हृदय रखने वाला, कांग्रेस की शक्ति का सजीव रूप और अन्तर्कालीन सरकार का प्रथम गृह-सदस्य, प्रत्यक्ष में बर्फ से ढका हुआ ज्वालामुखी सरदार पटेल जब उबल कर फट पड़ता है, उस समय भारत के बाहरी तथा भीतरी दुश्मनों को मृत्यु की भीषण विभीषिका दिखाई देती है।''

---श्री लवानियाँ

9.''उनकी निर्भय देशभक्ति और भारत की आजादी के लिए उन्मुक्त जोश, उनका अभियान और विरोध करने की हठी शक्ति, उनका त्याग और गांधी जी के प्रति उनकी पूर्ण एवं निश्शंक भक्ति, इन सब गुणों ने उन्हें हमारी राष्ट्रीयता की केंद्र-शक्ति बना दिया है। अपने कठोर, रूखे एवं गम्भीर स्वरूप के साथ वे एक लोहे की पिटारी की भाँति प्रतीत होते हैं जिसके भीतर भक्ति, मृदुता एवं सौन्दर्य के दुर्लभ रत्न छिपे है।''

---सरोजिनी नायडू

10. ''पटेल इच्छा और उद्देश्य में दृढ़ हैं, एक महान संगठनकर्ता हैं, भारत की स्वाधीनता के उद्देश्य में लगन के साथ लगे रहे हैं और उन्होंने आवश्यक शक्तिशाली प्रतिरोध की सृष्टि की है। अधिकांश देशवासियों ने उन्हें अपनी रुचि का नेता पाया है और उनके साथ अथवा मातहत काम करके हिन्दुस्तान की स्वतंत्रता की स्थायी नींव डाली है।''

---जवाहर लाल नेहरू

11. ''मैं अपने सरदार वल्लभभाई को अपना महान नेता मानता हूँ और उन्हें बड़ा कर्मकांडी समझता हूँ।''

---केशवदेव मालवीय

12.''वे अपने लिए कुछ नहीं चाहते, लेकिन बदमाशों और अत्याचारियों को आसानी से नहीं छोड़ते। उनका सिद्धान्त ठीक चर्चिल जैसा ही है कि दुश्मन को पहले खूब छकाओ, बाद में उससे दयायुक्त वर्ताव करो।

---डॉ० पट्टाभि सीतारमैया

13.''इतिहास का तटस्थ, निष्पक्ष और सुविचारित निर्णय यही हो सकता है कि इन महान नेताओं ने भारत देश को संतुलित स्थिरता, एकता तथा प्रगति के मार्ग पर ले जाने में महत्त्वपूर्ण भाग लिया था। और, जब ऐसा किया जायेगा, तब प्रशंशापूर्ण लोगों की आँखें उस विराट पुरुष पर अपने आश्रयदाता सन्त और निर्माता सरदार पटेल पर ही जाकर टिकेंगी जिनकी श्रद्धा, दूरदृष्टि तथा संगठनप्रतिभा ने उन्हे जीवन-दान दिया, उन्हे महत्त्व और शक्ति प्रदान की तथा उन्हे राजनीति और राजनीतिज्ञों के खिलौने बनने से रोका।''

---वी.शंकर

14.''श्रद्धा, दूरदृष्टि तथा संगठन-प्रतिभा---ऐसे गुण हैं, जिनके प्रभाव से सरदार ने देश के कल्याण के लिए (उन्हे अपने द्वारा किये जाने वाले कार्य की अपेक्षा अन्य किसी भी बात में कोई रस नहीं था) निरन्तर काम करते हुए उसकी कठिन समस्याएँ हल की थीं। और उसका शुभ परिणाम था देश की 'एका, स्थिरता और प्रगति।''

---वी. शंकर

15.''हम यह माने बिना नहीं रह सकते कि सरदार पटेल सचमुच न केवल भारतीय एकता के निर्माता थे बल्कि आधुनिक युग में भारतीय इतिहास के महान स्रष्टा भी थे। भारत के इस सपूत को हम जितना भी स्नेह, आदर और श्रद्धाञ्जलि दें, कम है।''

---मोरार जी देसाई

16.''अंग्रेज ने जिस लावारिस हालत में 18 साल पहले भारत छोड़ा था यदि उन जैसे कुशल हाथों में देश की बागडोर उस समय न होती तो स्थिति आज कुछ और ही दिखाई देती। जहाँ-जहाँ भी उनकी राय नहीं मानी गई, वहीं ठोकर लगी।''

---प्रकाशवीर शास्त्री, सांसद

17."इतिहास के पाठों से लाभ उठाकर उन्होंने पूर्ण रूप से यह समझ लिया था कि देश की प्रगति के लिए सबको मिलकर प्रयत्न करना होगा। सरदार अत्यन्त व्यावहारिक राजपुरुष थे और प्रशासनिक प्रतिभा के धनी थे, इसलिए वे मिलजुलकर काम करने के मूल्य को जानते थे। एक सफल राजनीतिज्ञ के नाते वे व्यावहारिक बुद्धिमत्ता तथा कार्य-साधकता के गुणों का सही मूल्यांकन भी कर सकते थे।" ---बी. शंकर

18. "आज का महान भारत पटेल जी का भारत है। राजाओं को रास्ते से हटाकर उन्होंने भारत को समूल नष्ट होने से बचा लिया।"

---कवि मोहनलाल महतो वियोगी

19. "सरदार पटेल भारत के बिस्मार्क रहे, जिनकी राजनीतिक पैनी बुद्धि, संगठन-कौशल्य, मार्गदर्शन, प्रबल इच्छाशक्ति, संयम, दूरदर्शिता आदि गुण बेजोड़ थे। वे दुनिया के उन महापुरुषों में रहे जिन्होंने अपने देश को ऊँचा उठाया। सरदार न होते तो आज का एक संघीय भारत कभी नहीं बन पाता।" **---सम्पादक राष्ट्रवाणी जनवरी 1951**

20."सरदार पटेल सच तो श्री शिवाजी और लोकमान्य तिलक की परम्परा में थे।"

---काका कालेलकर

21. "तू वह जौहर था जमाने में न सानी जिसका।
धार तू वह था कि बिगड़ा नहीं पानी जिसका।।
वह सियासत की रियासत भी झुकी जाती थी।
तेरे कदमों में इशारे से गिरी जाती थी।।" **---बेढब बनारसी**

22. "मेरा अपना तुच्छ विचार तो यह है कि वह हमारे पहले प्रधानमंत्री होते तो कदाचित् जितनी समस्याओं का अब देश को सामना करना पड़ रहा है उनमें से एक भी पैदा नहीं होतीं।"

---चौधरी चरण सिंह

23. "यह सरदार पटेल ही थे जिन्होंने भारत के कृषक वर्ग को नवजीवन प्रदान किया था। उनका मन जादू-भरा स्पर्श था।" **---विनोबा भावे**

24. "इतिहास में ऐसा दूसरा उदाहरण नहीं मिलता जहाँ किसी स्वतंत्र राष्ट्र के किसी अन्य नेता ने अपने देश के लिए इतने कम समय में इतना अधिक कार्य किया हो जैसा सरदार वल्लभभाई पटेल ने संघीय गृहमंत्री तथा उप प्रधानमंत्री के रूप में तीन वर्षों में किया।"

---रजनी पटेल

भूतपूर्व अध्यक्ष, बम्बई कांग्रेस

25. "स्वतंत्रता के बाद जिस कौशल से सरदार पटेल ने विभिन्न राजकीय रियासतों को भारत में शान्तिपूर्ण ढंग से और शासकों की सहमति से मिलाया वह बहुत कुछ अद्वितीय जैसा था। सरदार को छोड़ कर कोई भी नेता इस चमत्कार को नहीं कर सकता था। यदि जवाहरलाल ने सरदार की सलाह पर ध्यान दिया होता तो चीन हमारे लिए वह खतरा नहीं बनता जो इस समय है। जहाँ कहीं भ्रष्टाचार पाया, कड़ाई से दबा दिया। भ्रष्टाचार और स्वार्थपरता, जो विनोबा के शब्दों में आजकल कानून बन गया है, उन्होंने बर्दास्त नहीं किया।"

---जय प्रकाश नारायण

26. "वल्लभभाई असमर्थ व्यक्तियों के प्रेरणास्रोत थे। कश्मीर समस्या में उनका योगदान बेमिसाल था। देश की कठिनतम समस्याओं का निराकरण वे चन्द मिनटों में अपने बुद्धिबल से निकाल देते थे। उनसे अंग्रेजी शासन बात करने में थर्राता था।"

---हेमवतीनन्दन बहुगुणा

27. "नेहरू को तो पट्टी पढ़ा सकता हूँ, पर पटेल को नहीं।"

---सर लाक हर्ट,

(अंग्रेज शासक)

28. "जिसने बिना शस्त्र ग्रहण किए एक ही वर्ष में इतना बड़ा चक्रवर्ती राज्य स्थापित कर दिया-- जितना न राम का था, न कृष्ण का, न अशोक का था, न अकबर का, न लहरों के स्वामी ब्रिटेन का। शरीर उसने एकलौती बेटी को सौंप दिया और चेतना अपनी जन्मभूमि को अर्पित की। पुत्री..... सूत कातती। उसी से उसका कुर्ता वनता, धोती वनती। ..... यही था उस परम सत्त्व का जीवन-वैभव। अपने ही में सम्पन्न, अपने ही में परिपूर्ण। उन्हीं विश्व के अप्रतिम राजनीतिज्ञ, चक्रवर्ती सार्वभौम सरदार वल्लभभाई पटेल की दिवंगत आत्मा को मेरा यह उपन्यास 'गोली' सादर समर्पित।" **---आचार्य चतुरसेन शास्त्री**

29. "सरदार पटेल की ऐतिहारिक उपलब्धियाँ हमारे लिए गौरवशाली देन हैं। वह महात्मा गांधी की अहिंसक सेना के महान सेनानियों में एक थे जो आत्मसंयम और अनुशासन की प्रतिमूर्ति थे। उन्होंने उन संकीर्ण दीवारों को, जो हमारे देश को रियासती टुकड़ों में विभाजित किए थी, जिस प्रकार तोड़ा उसके लिए राष्ट्र उन्हें विशेष तौर से याद करता है।" **---इंदिरा गांधी**

30. "वास्तव में देखा जाए तो वह मानव जाति के उन मुक्तिदाताओं में से थे जो दूसरों के लिए कष्ट उठा कर, सत्य को निर्भीकतापूर्वक अपना कर, राष्ट्रनिर्माण और लोककल्याण के लिए हर प्रकार का त्याग करने के लिए सबसे आगे रहते हैं। वह न्याय के लिए लड़ने वाले एक महान् योद्धा थे।" **---बी०डी० जत्ती, उपराष्ट्रपति**

31."सरदार ने संविधान की रचना में, जम्मू और कश्मीर राज्य की समस्याओं में, हैदराबाद राज्य की समस्या को दृढ़ निश्चय तथा उद्देश्यपूर्ण दृष्टि से हल करने में, अन्य अनेक प्रश्नों को हल करने में--जिसके फलस्वरूप देश में एकता, व्यवस्था और स्थिरता स्थापित हुई--तथा संयुक्त और एकीकृत भारत में लोकतांत्रिक शासनपद्धति स्थापित करने में जो भाग लिया, उसका वर्णन विस्तार से करना संभव नहीं है।

"......अक्सर सरदार का यह योगदान निर्णायक होता था; वे चर्चाओं की अराजकता में से पुनः व्यवस्था को जन्म देते थे; वे स्थिति को उसके उचित परिप्रेक्ष्य तथा व्यावहारिक स्वरूप में रख देते थे। अक्सर कुछ ही शब्दों में वे दलीलों की बौछार को खामोश कर देते थे। अपने इतिहास के किसी भी काल में भारत को इतनी अधिक कठिन समस्याएँ हल नहीं करनी पड़ीं और किसी भी समय भारत की सरकार को इतनी संख्या में दूरगामी परिणाम वाले मूलभूत निर्णय नहीं करने पड़े, जितने उसे उन तीन वर्षों में करने

पड़े, जो सरदार को स्वाधीनता के बाद प्राप्त हुए थे। इतनी महान सिद्धि इतने थोड़े समय में संभव हो सकी, इसका श्रेय बड़ी हद तक सरदार की अनोखी पद्धति को है।"

---वी. शंकर

32. "इस विरासत में प्राप्त हुए प्रशासनतंत्र को सुरक्षित रखने के कारण स्वाधीनता के प्रारम्भिक वर्षों में न केवल आवश्यक सेवाएँ चालू रहीं, बल्कि सरकार की सत्ता भी सफलता से स्थापित हो सकी। कानून, व्यवस्था और सत्ता की स्थापना नये स्वतंत्र भारत के समक्ष खड़ा सबसे महत्वपूर्ण कार्य था; और यह सरदार पटेल का भारतीय राष्ट्र के लिए बहुत बड़ा.....योगदान था।"

---माइकेल एडवर्ड्स

33. सरदार पटेल की सत्तरवीं जयन्ती के अवसर पर श्री मावलंकर ने सरदार पटेल का चित्रण करते हुए लिखा था---

"बाँका जवान, ठेठ नये ढंग के काट वाले कोट-पतलून पहने हुए, ऊँचे-से-ऊँचे किस्म की बनात का हैट जरा टेढ़ा रखा हुआ, सामने वाले आदमी को देखते ही भाँप जाने वाली तेजस्वी आँखें, बहुत कम बोलने की आदत, मुँह से जरा मुस्कराकर मिलने आने वालों का स्वागत करें, परन्तु उनके साथ ज्यादा बातचीत में न पड़ें, मुखमुद्रा दृढ़तासूचक गम्भीर, कुछ अपनी श्रेष्ठता के मान के साथ दुनिया को देखने वाली तीखी नजर, जब भी बोलें तब उनके शब्दों में आत्मविश्वास और प्रभाव से भरी हुई दृढ़ता, दीखने में कठोर और सामने वाले मनुष्य को अपनी इज्ज़त करने के लिए मजबूर करने वाले---ऐसे बैरिस्टर अहमदाबाद में वकालत करने आए।"

---मावलंकर

34. जवाहरलाल नेहरू ने सरदार पटेल के सम्बन्ध में कहा है--

"वे एक ऐसी शक्ति के स्रोत थे, जो काँपते दिलों को साहस प्रदान करते थे।"

---जवाहरलाल नेहरू

डॉ० राम सिया सिंह की प्रकाशित रचनाएँ

1. अ. भा. कूर्मि क्षत्रिय परिचय प्रदीपिका	रु. 30. 00
2. कूर्मवंशी क्षत्रिय कीर्तिकथा (द्वितीय संशोधित एवं परिवर्द्धित संस्करण)	रु. 25. 00
3. सरदार पटेल की अमर गाथा	रु. 5. 00
4. दलितों के मसीहा राजर्षि छत्रपति शाहू	रु. 5. 00
5. समाजसेवी जगमगाते हीरे	रु. 50. 00
6. गोंडवाना की गौरवगाथा	रु. 30.00
7. मार्मिक लघुकथाएँ	रु. 15. 00
8. सफलता के सूत्र	रु. 10. 00
9. बोधक लघुकथाएँ	रु. 4. 00
10. गीताकाव्य (भगवद्गीता का पद्यानुवाद)	रु. 10. 00
11. गायत्री परिवार ही क्यों?	रु. 2. 00
12. माँ नर्मदा माहात्म्य	रु. 2. 00
13. अरविन्द हिन्दी निबंध, पत्र एवं व्याकरण	रु. 3. 00
14. अरविन्द संस्कृत निबंध, व्याकरण	रु. 3. 00
15. अरविन्द संस्कृत व्याकरण चार्ट	रु. 2.00
16. Arvind Essays Letters & Grammar	Rs. 3.00
17. Arvind Tense Voice & Narration Chart	Rs. 2.00
18. महासती कमला	रु. 2. 00
19. सरल प्राकृतिक चिकित्सा	रु. 15. 00

अप्रकाशित रचनाएँ

20. प्राचीन भारत में नागरिकता (पी-एच. डी. का शोध प्रबन्ध, पृष्ठ लगभग 544)
21. कायाकल्प (व्यंग्यकथाएँ)
22. प्रेरणाप्रद बोधकथाएँ
23. बालविकास की कहानियाँ
24. युग निर्माण नाटकमाला
25. युगऋषि पं० श्रीराम शर्मा आचार्य
26. गरीबों का मसीहा : लोहिया
27. लोहिया और मार्क्स
28. छत्तीसगढ़ के लोकगीत
29. सचित्र अमरकंटक दर्शन